श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 31, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार, 6 सितम्बर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

पाकिस्तानी गोलाबारी में एक सैनिक शहीद, जवाब में पाक सेना का ईधन डिपो तबाह और उनके तीन सैनिक भी मरे

पुंछ में पाक सेना ने एलओसी के साथ सटे करीब एक दर्जन गांवों को निशाना बनाया। इससे कई मकान क्षतिग्रस्त हो गए और कई मवेशी भी मारे गए हैं

श्रीनगर, एएनआइ। पाकिस्तान ने शनिवार को नियंत्रण रेखा पर उत्तरी कश्मीर के नौगाम सेक्टर (कुपवाड़ा) और पुंछ जिले के शाहपुर किरनी, कसबा सेक्टर में भारी गोलीबारी की। नौगाम में भारतीय सेना का एक जवान शहीद हुआ है। जबकि दो अन्य सैन्यकर्मी घायल हुए हैं। इधर, पुंछ में पाक सेना ने एलओसी के साथ सटे करीब एक दर्जन गांवों को निशाना बनाया। नौगाम में भारतीय सेना ने भी पाकिस्तानी गोलाबारी का करारा जवाब दिया है। इससे पाकिस्तानी सेना का एक ईधन डिपो तबाह हो गया और उसके तीन सैनिकों के मारे जाने या घायल होने की सूचना है। देर रात तक दोनों तरफ से एक-दूसरे के ठिकानों पर भीषण गोलाबारी जारी थी।

रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता कर्नल राजेश कालिया ने कहा कि पाकिस्तानी सैनिकों ने नौगाम सेक्टर के अंतर्गत हरदूल सब सेक्टर में स्थित भारतीय सैन्य व नागरिक ठिकानों पर मोर्टार व तोप के गोले बरसाए। कुछ गोले एक अग्रिम चौकी के पास गिरे। इनसे हुए धमाकों की चपेट में आकर तीन सैन्यकर्मी गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तुरंत सैन्य अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने गन्नर भूपेंद्र च्सह को शहीद करार दिया। अन्य दो सैन्यकर्मियों लांस नायक वेंकटेश और सिपाही शाहजल की हालत गंभीर, लेकिन स्थिर बनी हुई है।

पाकिस्तानी सेना की 10 बलोच बटालियन ने सुबह लगभग नौ बजे शाहपुर किरनी और कसबा सेक्टर में भारतीय सेना की अग्रिम चौकियों के साथ रिहायशी इलाकों में मोर्टार दागने शुरू किए। भारतीय सेना ने जवाबी कार्रवाई की तो पाकिस्तानी सैनिकों ने फायरचग की रेंज बढ़ाकर नियंत्रण रेखा के नजदीकी इलाकों देगवार, माल्टी, दलान, डोकड़ी सहित कई रिहायशी इलाकों में मोर्टार दागने शुरू कर दिए। गोलाबारी की चपेट में आने से नियंत्रण रेखा के नजदीकी गांव में कई मकान क्षतिग्रस्त हो गए। वहीं, इलाके में कई मवेशी भी मारे गए और कई घायल हुए हैं। एलओसी पर गोलाबारी की आवाज नियंत्रण रेखा से कई किलोमीटर दूर पुंछ शहर तक सुनाई दी। स्थानीय लोगों ने बताया कि जिन रिहायशी इलाकों में शनिवार को पाकिस्तानी सैनिकों ने मोर्टार दागे हैं, उन इलाकों में 1965, 1971 के बाद 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान भी तोप के गोले नहीं पहुंचे थे। इस बार पाक सैनिकों ने गोलाबारी के दौरान सभी हदों को पार कर दिया। गनीमत यह रही कि किसी प्रकार का जानी नुकसान नहीं हुआ है।

रायपुर में सड़क दुर्घटना में सात लोगों की मौत

ओडिशा के सीएम ने किया 2-2 लाख रुपये की मदद का एलान

ओडिशा, एएनआइ। शनिवार सुबह छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से दर्दनाक हादसा हो गया। सेरीखेडी के पास बस और ट्रक के बीच भीषण भिड़त में 7 मजदूरों की मौत हो गई। हादसे में 6 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई वहीं एक मजदूर की अस्पताल ले जाते दम तोड़ दिया। दरअसल करीब 50 मजदूर बस में सवार होकर ओडिशा के गंजाम जिले से गुजरात काम करने के लिए जा रहे थे। मंदिर हसौद इलाके के छेरीखेड़ी के पास तेज रफ्तार ट्रक ने बस को टक्कर मार दी। हादसे में सात लोगों की मौत हो गई है।

इसी बीच ओडिशा के सीएम नवीन पटनायक ने एलान किया है कि लोगों के परिजनों को 2-2 लाख रुपये देने की घोषणा की है। साथ ही सीएम ने मंत्री सुशांत सिंह को तत्काल आवश्यक सहायता देने के लिए रायपुर आने का निर्देश दिया। जानकारी के लिए बता दें कि हादसा आज सुबह 3:30 बजे हुआ जब बस रायपुर में चेरी खेड़ी इलाके से गुजर रही थी। घायल व्यक्तियों को यहां अंबेडकर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। टक्कर लगने से बस के परखच्चे उड़ गए। मजदूरो के बीच अफरा तफरी मच गई। हादसे में 19 मजदूर घायल हो गए जबकि 7 की मौत हो गई। घायलों को आंबेडकर अस्पताल भर्ती कराया गया है। घायल मजदूरों की हालत नाजुक बताई जा रही है।

हादसे में मारे गए मजदूरों के नाम- सुशांत स्वाई पिता कार्तिक स्वाई(40) निवासी गंजाम, ओडिशा, नारायण गुर पिता पंचू गुर(25) निवासी गंजाम, ओडिशा, कैलाश पिता तिन्नातो जना (36) निवासी सूरत, गुजरात, समीर महनकुंडा पिता राजू महनकुंडा(17) निवासी गंजाम, ओडिशा,

उ0प्र0 की दस रैंकिंग की छलांग, योगी सरकार के प्रयास से दूसरे नम्बर पर

लखनऊ, जेएनएन। कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण से संघर्ष करने के बाद भी सीएम योगी आदित्यनाथ का प्रयास प्रदेश के राजस्व को भी बढ़ाने पर है। इस प्रक्रिया में राज्य के व्यापार के तरीके में भी काफी सुधार हुआ है और ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग में उत्तर प्रदेश ने लम्बी छलांग लगाई है। इस रैंकिंग से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने राज्य में व्यापार और उद्योग के लिए काफी बेहतर माहौल तैयार करने में सफलता पाई है।

निवेशकों-उद्यमियों के बीच यूपी की छवि बदलने के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा बार-बार किए गए दावे पर भारत सरकार के उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआइआइटी) ने भी मुहर लगा दी। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की रैंकिंग में यूपी को देश में दूसरा स्थान मिला है। 2017-18 की तुलना में दस पायदान की ऊंची छलांग के पीछे औद्योगिक सुधार के लिए उठाए गए 186 कदम हैं, जिनमें बहुत अहम हैं सिंगल विंडो पोर्टल निवेश मित्र। प्रदेश की कमान संभालने के साथ ही योगी आदित्यनाथ ने औद्योगिक विकास को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल कर लिया। सरकार, निवेशकों को आकर्षित करने के लिए नियम-नीतियों में संशोधन करती रही। सरकारी दावे के मुताबिक डीपीआइआइटी ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए कुल 187 सुधारात्मक कदम सुझाए थे, जिनमें से यूपी सरकार ने 186 को लागू किया।

राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए ईज ऑफ डूइंग रैंकिंग को बिजनेस रिफॉर्म एक्शन प्लान के तहत डिपार्टमेंट फॉर प्रमोशन ऑफ इंडस्ट्री एंड इंटर्नल ट्रेड तैयार करता है। इससे पहले यह रैंकिंग जुलाई 2018 में जारी की गई थी। इस रैंकिंग चार्ट में टॉप पर आंध्र प्रदेश था। तेलंगाना दूसरे और हरियाणा तीसरे स्थान पर थे।उत्तर प्रदेश ने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में 12वीं रैंक से पहले की स्थिति में दस रैंक की छलांग लगाई है। अब यूपी व्यापार करने में आसानी के मामले में भारत में नंबर दो पर है। केंद्र सरकार घरेलू व वैश्विक निवेशकों को आक?षत करने और राज्यों में कारोबारी माहौल सुधारने के लिए हर वर्ष ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग जारी करती है। जिसे राज्य व्यापार सुधार एक्शन प्लान रैंकिंग भी कहा जाता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने शनिवार को वर्ष 2019 के लिए यह रैंकिंग जारी की। जिसमें उत्तर प्रदेश के हाथ एक बड़ी सफलता लगी है।

कोरोना के चलते मप्र में अभी नहीं खुलेंगे स्कूल

भोपाल, स्टेट ब्यूरो। मध्य प्रदेश में अभी स्कूल नहीं खोले जाएंगे। कोरोना संक्रमण की स्थिति नियंत्रित होने के बाद ही इन्हें खोला जाएगा। निजी स्कूलों की फीस को नियंत्रित करने के लिए सरकार कानून बनाएगी। यह बात स्कूल शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) मंत्री इंदर सिंह परमार ने मीडिया से चर्चा में कही।

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के अनलॉक चार के दिशा-निर्देशों का पालन किया जाएगा। 30 सितंबर तक स्कूल नहीं खोले जाएंगे, क्योंकि अगर किसी बच्चे को कुछ हो गया तो उसका जवाब हमें ही देना होगा।

निजी स्कूल हाई कोर्ट के आदेश के अनुसार सिर्फ ट्यूशन फीस ले सकते हैं। इसमें भी वृद्धि करके जबरदस्ती वसूली करने की शिकायतें सामने आई हैं। फीस नियंत्रण के लिए तय किया है कि कानून बनाया जाएगा। इसके लिए जल्द ही सरकार अधिनियम लाएगी।

राजनाथ सिंह की चीन को दो टूक, एक इंच जमीन नहीं छोड़ेगा भारत

नई दिल्ली, जेएनएन। मास्को में भारत और चीन के रक्षा मंत्रियों के बीच हुई ढ़ाई घंटे लंबी बातचीत का तत्काल कोई नतीजा निकलता तो नहीं दिख रहा, लेकिन चीनी पक्ष को भारत ने पूरे दम से यह बता दिया कि पूर्वी लद्दाख सेक्टर में अपने हिस्से की एक इंच जमीन से भी समझौता नहीं होगा। चीन के रक्षा मंत्री वी फेंगी को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट शब्दों में बताया कि भारत अपनी संप्रभुता और अखंडता पर कोई खरोंच नहीं आने देगा। पूर्वी लद्दाख स्थित वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) में सैन्य तनाव पसरने के बाद दोनो देशों के शीर्ष नेताओं के बीच पहली बार आमने सामने मुलाकात हुई थी। मौजूदा सैन्य तनाव को घटाने के लिए दोनो रक्षा मंत्रियों के बीच आगे भी बातचीत जारी रखने की सहमति बनी है, जो इस बैठक का एकमात्र सकारात्मक पहलू नजर आता है।

चीन इस वार्ता के लिए कितना प्रयासरत था इसका संकेत इससे भी मिलता है कि बैठक के दौरान खुद रक्षामंत्री वी येंग ने बताया कि पिछले 80 दिनों में उन्होंने तीन बार राजनाथ से वार्ता की इच्छा जताई थी। लेकिन वार्ता के दौरान चीन का रवैया बहुत नहीं बदला था। बातचीत बेहतर माहौल में हुई और चीनी पक्ष के हर झूठे दावे का बिंदुवार प्रतिकार भी हुआ। बातचीत में 30 व 31 अगस्त को एलएसी पर पैंगांग झील के उत्तरी व दक्षिणी इलाके की स्थिति पर खास तौर पर चर्चा हुई है। बताते चलें कि दोनो देशों के रक्षा मंत्री मास्को में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में हिस्सा लेने के लिए गए थे। यहीं पर अगले गुरुवार को भारत व चीन के विदेश मंत्रियों के बीच मौजूदा सैन्य तनाव पर वार्ता होने की उम्मीद है। माना जा रहा है कि जहां पर रक्षा मंत्रियों ने बातचीत खत्म की है उसे अब दोनो विदेश मंत्री आगे बढ़ाएंगे।

मास्को बैठक के बाद शनिवार को सुबह दोनो देशों की तरफ से इसके बारे में जानकारी दी गई। दोनों बयानों से इस बात के संकेत नहीं मिलते कि कोई भी पक्ष पीछे हटने को तैयार है। चीन के रक्षा मंत्रालय ने सैन्य तनाव विवाद की पूरी जिम्मेदारी भारत पर डालते हुए कहा है कि इसे कम करने की जिम्मेदारी भी भारत की है। दोनो पक्षों को राष्ट्रपति शी चिनफिंग और पीएम नरेंद्र मोदी के बीच पूर्व में बनी सहमति के आधार पर तनाव दूर करने के लिए कदम उठाने चाहिए। आपसी मतभेद दूर करने के लिए जो समझौते किये गये हैं उसे भारत कड़ाई से लागू करेगा व ऐसा कोई भी कदम नहीं उठाएगा जिससे माहौल और बिगडे।

चीन ने यह भी कहा है कि भारत जानबूझ कर नकारात्मक सूचनाएं नहीं फैलाएगा। भारतीय रक्षा मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में भी शीर्ष नेताओं की तरफ से दिए गए दिशानिर्देश को लागू करने की बात है। इसके मुताबिक रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चीनी सैनिकों की तरफ से मनमाने तरीके से यथास्थिति को बदलने के बारे में बताया। रक्षा मंत्री के शब्दों में- 'सीमा प्रबंधन को लेकर भारतीय सैनिक बेहद सतर्क हैं और हमेशा जिम्मेदारी से कदम उठाते हैं लेकिन देश की अखंडता व संप्रभूता को लेकर उनके संकल्प पर भी किसी को शक नहीं होनी चाहिए।'

उन्होंने चीन के रक्षा मंत्री से कहा कि चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) को भारतीय सेना के साथ मिल कर सैनिकों की वापसी को लेकर बिना किसी देरी के काम करना चाहिए ताकि शीघ्रता से मई, 2020 से पहले वाली स्थिति लागू की जा सके। चीनी व भारतीय रक्षा मंत्री ने अपने स्तर पर व कूटनीतिक और सैन्य स्तर पर बातचीत को जारी रखने की सहमति जताई है।

नक्सलियों के कंगारू कोर्ट में की सरपंच के दामाद समेत चार की हत्या

बीजापुर, जेएनएन। छत्तीसगढ़ में बीजापुर जिला मुख्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर बैलाडिला की तराई में बसे गांव पुसनार में नक्सलियों ने शुक्रवार सुबह कंगारू कोर्ट (जन अदालत) लगाकर सरपंच के दामाद समेत चार लोगों की हत्या कर दी। मारे गए सभी लोग ट्रैक्टर से सामान ढुलाई का कार्य करते थे। क्षेत्र में चल रहे सड़क निर्माण कार्य में इनके द्वारा सहयोग किए जाने से नक्सलियों में नाराजगी थी। वारदात के बाद नक्सली गांव के तीन अन्य लोगों को अपने साथ ले गए हैं। नक्सलियों ने सड़क का निर्माण करने वाले ठेकेदार को भी जन अदालत में बुलाया था, पर वह नहीं पहुंचे। ग्रामीणों ने सिर्फ एक शव ही पोस्टमार्टम के लिए सौंपी है। तीन शवों को देने से इन्कार कर दिया है।

सूत्रों के अनुसार, नक्सलियों ने शुक्रवार सुबह जन अदालत लगाई। लगभग 150 लोगों की उपस्थिति में लगी जन अदालत में नक्सलियों ने सड़क निर्माण कार्य में सहयोग देने वालों के लिए मौत की सजा सुनाई। इसके बाद मेटापाल की सरपंच पाकली कुंजाम के दामाद नंगा कुंजाम, पुसनार के धुरवा सन्नू, सन्नू पूनेम एवं पल्ली की धारदार हथियार से वार कर हत्या कर दी गई। जिनकी हत्या की गई है, उन सभी के पास ट्रैक्टर था। वह सभी सड़क निर्माण में सामान ढुलाई का कार्य कर रहे थे। अपुष्ट सूत्रों के मुताबिक, जन अदालत से तीन अन्य लोगों को भी नक्सली अपने साथ ले गए हैं। इनमें एक जेसीबी ऑपरेटर और दो ट्रैक्टर चालक हैं। उनके बारे में कोई सुराग नहीं मिला है।

राज्य सरकार की हर संभव मदद करेगी केंद्र : प्रकाश जावड़ेकर

मुंबई, एएनआइ। महाराष्ट्र में कोरोना वायरस संक्रमण तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में केंद्र सरकार ने कहा है कि प्रदेश सरकार की हर संभव मदद की जाएगी। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि पुणे के संकट को खत्म करने के लिए जो भी कार्यक्रम होगा, उसमें केंद्र सरकार राज्य सरकार की पूरी सहायता करेगी। पुणे में कोविड-19 की स्थिति पर हुई समीक्षा बैठक के बाद केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने बताया कि कंटेनमेंट जोन में ज्यादा टेस्ट करने, व्यापक पैमाने पर सीरो सर्वे करने, मास्क और थूकने पर कड़ी कार्रवाई करने का फैसला हुआ है।

बीआरओ ने बनाया खास मार्ग

लेह, एएनआइ। भारत और चीन के बीच इन दिनों सीमा पर तनाव का माहौल है। दोनों देशों के तनाव के बीच ही लेह लद्दाख में सीमा सड़क संगठन दुर्गम इलाकों में सड़क बनाने का काम तेजी से कर रहा है। बीआरओ ने तीसरी सड़क पर काम लगभग खत्म कर दिया है, जिसे निम्मू-पदम-दरचा मार्ग कहा जाता है। इस मार्ग से करगिल क्षेत्र में पहुंचना आसान हो जाएगा। ये मार्ग रणनीतिक तौर पर भारतीय सेना के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस हाइवे पर सैनिकों की आवाजाही को ट्रेस कर पाना पड़ोसी देशों के लिए नामुमकिन है। इस रास्ते से सैनिकों के लिए हथियार और सेना की टुकड़ियों को समय में पहुंचाने में काफी आसानी मिलेगी।

सड़क निर्माण की जानकारी देते हुए बीआरओ इंजीनियर एमके जैन ने बताया कि यह मार्ग अब पूरी तरह से कई टन वजन वाले भारी वाहनों के लिए तैयार हो गया है। अब सेना इस मार्ग का उपयोग कर सकती है। इस मार्ग का महत्व यह है कि सेना मनाली से लेह तक के मार्ग में लगभग 5-6 घंटे बचा सकती है। इसके साथ ही इंजीनियर ने बताया कि किसी जोखिम के बिना भारतीय सेना अपनी गतिविधि को पूरा कर सकती है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि यह मार्ग कम ऊंचाई पर है, इसलिए इसे वाहन के आवागमन के लिए लगभग 10 से 11 महीने के लिए खोला जा सकता है। यह मार्ग 258 किलोमीटर लंबा है। उन्होंने कहा कि हमने डाइवर्टिंग करके इसे एक अलग सड़क से जोड़कर कनेक्टिविटी दी है क्योंकि अभी 30 किलोमीटर की दूरी को पूरा किया जाना बाकी है। गौरतलब है कि माल ढोने और सेना की टुकड़ियों के परिवहन के लिए मुख्य रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला मार्ग जोजिला से है, जो कि द्रास-कारगिल से लेह तक जाता है। 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान पाकिस्तानियों द्वारा एक ही मार्ग को भारी निशाना बनाया गया था और सड़क के किनारे ऊंचाई वाले पहाड़ों में उनके सैनिकों द्वारा लगातार बमबारी और गोलाबारी की गई थी।

बेंगलुरु ड्रग रैकेट मामले में अभिनेत्री और 11 अन्य के खिलाफ मामला दर्ज

बेंगलुरु, प्रेट्र। बेंगलुरु पुलिस ने ड्रग आपूर्ति मामले में कन्नड़ फिल्मों की अभिनेत्री रागिनी द्विवेदी और 11 अन्य लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस का कहना है कि ये लोग पार्टियों में विभिन्न व्यक्तियों को विक्रेताओं के जरिये नशीले पदार्थो की आपूर्ति करते थे। पुलिस ने बताया कि इनमें से छह आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया गया है। सूत्रों के अनुसार, बेंगलुरु पुलिस की केंद्रीय अपराध शाखा के सहायक आयुक्त केसी गौतम की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया है। इसमें शहर में होने वाली पार्टियों के प्रभावशाली लोगों को आरोपित किया गया है। इनमें एक विदेशी नागरिक भी शामिल है।पुलिस ने बताया कि इन 12 लोगों के अलावा सड़क परिवहन कार्यालय में क्लर्क बीके रविशंकर के खिलाफ अलग से मामला दर्ज किया गया है। वह रागिनी द्विवेदी का करीबी है। वह इस समय एक अन्य मामले में पुलिस की हिरासत में है।

देश में 12 सितंबर से चलेंगी 80 नई स्पेशल ट्रेनें, 10 सितंबर से रिजर्वेशन शुरू : रेलवे

नई दिल्ली, जेएनएन। रेल यात्रा की बढ़ती मांग के मद्देनजर भारतीय रेलवे ने 12 सितंबर से 80 और ट्रेनों के संचालन को हरी झंडी दे दी है। इन ट्रेनों के लिए रिजर्वेशन की प्रक्रिया 10 सितंबर से चालू हो जाएगी। यात्रा के लिए रिजर्वेशन जरूरी होगा। ये ट्रेनें पहले से चलाई जा रही 230 स्पेशल ट्रेनों के अलावा होंगी। इसके साथ रेल पटरियों पर दौड़ने वाली स्पेशल ट्रेनों की कुल संख्या 310 हो जाएगी।

जिन ट्रेनों को चलाने का एलान किया गया है उनमें वाराणसी वंदे भारत एक्सप्रेस, लखनऊ शताब्दी और गोरखपुर व प्रयागराज हमसफर एक्सप्रेस शामिल हैं।

रेलवे बोर्ड के चेयरमैन विनोद कुमार यादव ने बताया कि यात्रियों की बढ़ती मांग को देखते हुए इन 40 जोड़ी ट्रेनों को चलाने का फैसला हुआ है। इन सभी स्पेशल ट्रेनों में यात्रियों की संख्या पर नजर रखी जाएगी। जिन रूट की ट्रेनों में वेटिंग लिस्ट लंबी होने लगेगी, वहां वैकल्पिक तौर पर एक क्लोन या डुप्लीकेट ट्रेन चलाई जाएगी। क्लोन ट्रेनों के संचालन की प्रक्रिया की शुरूआत अगले 10 दिनों के भीतर कर दी जाएगी। यादव ने बताया कि राज्यों की मांग पर और भी ट्रेनें चलाई जा सकती हैं। राज्य अथवा केंद्रीय सेवा की परीक्षाओं के लिए या ऐसे ही किसी और उद्देश्य के लिए राज्य सरकारों के अनुरोध पर अतिरिक्त ट्रेनों का संचालन किया जा सकता है। यादव ने यह भी स्पष्ट किया कि अभी किसी भी श्रेणी में यात्रियों को चादर और कंबल नहीं उपलब्ध कराया जाएगा। बंगाल सरकार की सहमति के बाद अगले सप्ताह से कोलकाता मेट्रो का संचालन भी शुरू किया जा सकता रेलवे के मुताबिक, कोरोना संकट के चलते मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना अपनी तय समयसीमा दिसंबर, 2023 तक पूरी नहीं हो सकेगी। महामारी के कारण परियोजना के लिए निविदाएं खोलने और भू-अधिग्रहण में देरी हुई है। यही नहीं, परियोजना लागत भी 1.08 लाख करोड़ से बढ़कर 1.70 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

नेशनल हाई स्पीड रेल कापोर्रेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) ने अभी तक परियोजना के लिए 63 फीसद जमीन अधिग्रहीत की है। गुजरात में 77, दादर नगर हवेली में 80 और महाराष्ट्र में करीब 22 फीसद जमीन का अधिग्रहण किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि महाराष्ट्र के पालघर और गुजरात के नवसारी जैसे इलाकों में जमीन अधिग्रहण में अभी भी दिक्कतें हैं।

उधर, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन वीके यादव का कहना है कि बुलेट ट्रेन परियोजना को पूरा करने की वास्तविक समयसीमा का आकलन अगले तीन से छह महीने में किया जा सकेगा जब एक निश्चित सीमा तक जमीन अधिग्रहण पूरा हो जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि परियोजना अच्छी तरह से आगे बढ़ रही है।

ग्रामीण अंचल

संक्षेप समाचार

56 की हुई कोरोना जांच 5 पाजटिव

करछना। शनिवार को सीएचसी करछना मे 56 लोगो की कोरोना जांच की गई इस दौरान 5 लोगो की रिर्पोट पाजटिव आई।अधीक्षक डा0 जीके तिवारी ने बताया कि पाजटिव मिले व्यकेतियो मे 3 औद्धोगिक थान के सिपाही के अलावा दो व्यक्ति और सक्रमित पाये गये है।उन्होने सभी से महामारी के प्रति सचेत रहने की सलाह देते हुए सीएचसी मे बेहिचक जाच कराने की अपील की है।बढते संक्रमण को देखते हुए शनिवार को तहीसल परिसर को सेनेटाइज किया गया।

भारत विकास परिषद की ओर से शिक्षकों का सम्मान

प्रयागराज। भारत विकास परिषद मंगलम की ओर से शिक्षक दिवस के अवसर पर ज्वाला देवी इंटर कॉलेज मंफोर्डगंज के अध्यापक अध्यापिका तथा मेधावी छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इलाहाबाद हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति जस्टिस अशोक कुमार रहे। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस धरती पर आदर्श और पहले गुरु माता होती है। सभी शिक्षकों - शिक्षिकाओं तथा छात्राओं को यूटिलिटी किट के साथ-साथ हनुमान चालीसा की पुस्तक उसको कुछ तथा पुष्प बुके देकर सम्मानित किया गया। जस्टिस अशोक कुमार को शाखा के अध्यक्ष नागेंद्र सिंह तथा रीजनल मंत्री संस्कार शिवनंदन गुप्ता ने पुष्प कुंज, अंग वस्त्र तथा गीता की पुस्तक देकर सम्मानित किया गया।

हाईकोर्ट समाचार

आनंद हास्पीटल के संचालक की खुदकशी मामले में डॉ भटनागर व कृष्ण की गिरफ्तारी पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मेरठ के आनंद हास्पिटल के संचालक की खुदकुशी के मामले में आत्महत्या के लिए उकसाने के आरोपी डॉ. मुक्ति भटनागर और डॉ. अतुल कृष्ण की गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने इस मामले में राज्य सरकार और अन्य पक्षकारों से चार सप्ताह में जवाब मांगा है। याचीगण को भी जवाब दाखिल करने के लिए दो हफ्ते का समय दिया है। याचिका पर अगली सुनवाई 19 अक्तूबर को होगी। डॉ. मुक्ति भटनागर व अन्य की याचिका पर न्यायमूर्ति मनोज मिश्र और न्यायमूर्ति अनिल कुमार नवम ने सुनवाई की। याचीगण के वकीलों का कहना था कि प्राथमिकी में लगाए गए आरोपों से आत्महत्या के लिए उकसाने का केस नहीं बनता है। मृतक लंबे समय से मुकदमा लड़ रहा था, जिसमें उसे सफलता नहीं मिली। ऐसे में हताश होने की स्थिति में खुदकुशी कर लेना स्वाभाविक है। इसका कोई आधार नहीं है कि याचीगण ने उनको खुदकुशी के लिए उकसाया था। कोर्ट ने सभी पक्षों से जवाब मांगते हुए तब तक के लिए गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है।

जेएनयू के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष की नागरिकता खत्म करने की याचिका खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने जेएनयू के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार की नागरिकता समाप्त करने की मांग को लेकर दाखिल याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने याची पर फिजूल की याचिका दाखिल कर अदालत का समय बर्बाद करने पर 25 हजार रुपये हजार्ना भी लगाया है। हजार्ने की रकम एक माह के भीतर महानिबंधक के समक्ष जमा कराने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति शशिकांत गुप्ता और न्यायमूर्ति शमीम अहमद की पीठ ने वाराणसी के नागेश्वर मिश्र की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है। याचिका में कहा गया कि जेएनयू के पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने नौ फरवरी 2016 को जेएनयू परिसर में देश विरोधी नारे लगाए थे। जिस पर उनके खिलाफ देशद्रोह की धाराओं में मुकदमा दर्ज है। दिल्ली में इस मुकदमे का ट्रायल चल रहा है। कन्हैया कुमार और उसके साथी उन आतंकवादियों को स्वतंत्रता सेनानी बताते हैं जो भारत की एकता और अखंडता पर प्रहार कर रहे हैं और उसे नष्ट करने का कुचक्र करते हैं। इसके बावजूद भारत सरकार कन्हैया की नागरिता समाप्त नहीं कर रही है। याचिका में कन्हैया कुमार की भारत की नागरिकता समाप्त करने की मांग की गई थी। कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 5(सी) और भारतीय नागरिकता कानून 1955 की धारा 10 के प्रावधानों का हवाला देते हुए कहा कि किसी भारतीय नागरिक को उसकी नागरिता से सिर्फ तभी वंचित किया जा सकता है जब उसे नागरिकता नेच्युरलाइजेशन (विदेशी व्यक्ति को भारत का नागरिक बनाने की प्रक्रिया) या संविधान में प्रदत्त प्रक्रिया द्वारा दी गई हो। कन्हैया भारत में ही पैदा हुआ है। वह जन्मजात भारत का नागरिक है। इसलिए सिर्फ मुकदमे का ट्रायल चलने के आधार पर उनकी नागरिकता समाप्त नहीं की जा सकती है। कोर्ट ने कहा कि ऐसा लगता है कि याची ने बिना कानूनी प्रावधानों का अध्ययन किए सिर्फ सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए याचिका दाखिल की है। ऐसे समय में जब कोरोना के कारण अदालतें सीमित तरीके से काम कर रही हैं और मुकदमों का बोझ बहुत है। इस प्रकार फिजूल की याचिका दाखिल करना न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग और अदालत के कीमती समय की बबार्दी है। कोर्ट ने इसके लिए याची पर 25 हजार रुपये का हजार्ना लगाया है। यह रकम उसे एक माह के भीतर महानिबंधक के समक्ष बैंक ड्राफ्ट द्वारा जमा करनी है। रकम एडवोकेटस एसोसिएशन के खाते में महानिबंधक द्वारा भेजी जाएगी। हजार्ना जमा न करने पर कोर्ट ने कलेक्टर वाराणसी को इसे राजस्व की तरह याची से वसूल करने का निर्देश दिया है।

अंबेडकर विवि से स्नातक में अंग्रेजी डिग्री धारकों को टीजीटी में मान्य न करने पर कोर्ट ने मांगा जवाब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा से प्राप्त स्नातक की डिग्री को टीजीटी अंग्रेजी विषय के लिए मान्य करार न देने पर माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड और राज्य सरकार से जानकारी मांगी है। इसे लेकर आशीष कुमार और अन्य अभ्यर्थियों ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की है। याचिका पर न्यायमूर्ति सरल श्रीवास्तव ने सुनवाई की। याचीगण का कहना है कि उन्होंने वर्ष 2016 में विज्ञापित टीजीटी अंग्रेजी के लिए आवेदन किया था। वह लिखित परीक्षा में सफल हुए और उनको साक्षात्कार में बुलाया गया। मगर साक्षात्कार में शामिल नहीं किया गया। बोर्ड का कहना है कि याचीगण के पास जो बीए की डिग्री है उसमें अंग्रेजी भाषा या अंग्रेजी साहित्य विषय के रूप में नहीं है। जबकि विज्ञापन की शर्त है कि अंग्रेजी भाषा या अंग्रेजी साहित्य में कोई एक विषय के रूप में होना चाहिए। याचीगण का कहना था कि अंबेडकर विश्वविद्यालय का आर्डिनेंस है कि दाखिले के समय संस्कृत, हिंदी और सामान्य अंग्रेजी अनिवार्य विषय के रूप में शामिल होंगे। विश्वविद्यालय ने इस बात का प्रमाणपत्र भी दिया है कि उनकी सामान्य अंग्रेजी, अंग्रेजी भाषा विषय के समकक्ष है। याचीगण का यह भी कहना है कि इससे पूर्व की भर्ती में अंबेडकर विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाले अभ्यर्थियों को चयन किया गया है और अंग्रेजी अध्यापक के रूप में काम भी कर रहे हैं। बोर्ड द्वारा दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है। कोर्ट ने इस मामले में दस सितंबर तक जानकारी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है।

मण्डलायुक्त ने पचास करोड़ की लागत से अधिक निर्माणाधीन परियोजनाओं की समीक्षा की

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर रमेश कुमार शनिवार को गांधी सभागार में 50 करोड़ रुपए से अधिक लागत वाली परियोजनाओं के निर्माण कार्यों की प्रगति समीक्षा करते हुए निर्माण कार्यों को उपलब्ध धन के सापेक्ष गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने रज्जू भैया विश्वविद्यालय, जिला कारागार नैनी, सीवरेज योजना, जनपद न्यायालय, हाईकोर्ट में कोर्ट रूम एवं चेम्बर निर्माण, कौशाम्बी में मेडिकल कालेज निर्माण कार्य, प्रतापगढ़ में गंगा नदी पर बन रहे सेतु तथा सांगीपुर में 220 केवी विद्युत पारेषण केन्द्र के निर्माण कार्य तथा राजकीय एलोपैथिक मेडिकल कालेज निर्माण कार्य, फतेहपुर में स्पोर्ट्स कालेज निर्माण कार्य तथा प्रयागराज में अमृत योजना के तहत जलापूर्ति हेतु पाईप लाइन बिछाये जाने के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को कार्यों को समय से पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया। मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि अवमुक्त धनराशि के सापेक्ष निर्माण कार्य की प्रगति शत-प्रतिशत होनी चाहिए। निर्माण कार्य की गुणवत्ता एवं समयबद्धता में किसी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता न बरती जाये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी आशीष कुमार, अपर आयुक्त भगवान शरण तथा अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

समीक्षा करते मण्डलायुक्त

विद्युत तार ठीक करते समय करंट से संविदा कर्मचारी की हुई मौत

प्रयागराज। बहरिया थाना क्षेत्र के सिलोखरा गांव में खम्भे पर विद्युत तार ठीक करते समय करंट लगने से संविदा कर्मचारी की मौत हो गई। हादसे के बाद सिकन्दरा पावर हाउस कर्मचारी फरार हो गए। परिजनों ने आरोप लगाया कि विद्युत विभाग की लापरवाही के चलते उसकी जान चली गई। सूचना पर पहुंची पुलिस शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। बहरिया के तुलापुर गांव निवासी घूरेलाल यादव (36) परिवार के भरण-पोषण करने के लिए सिकन्दरा पावर हाउस में सविंदा पर लाइनमैन का काम करता था। शनिवार दोपहर वह सटडाउन लेकर सिलोखरा गांव की कम्पलेन ठीक करने गया था। वह खम्भे पर चढ़कर तार जोड़ रहा था, इसी बीच किसी ने सप्लाई चालू कर दी। जिससे वह करंट की चपेट में आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी होते ही पावर हाउस से कर्मचारी फरार हो गए। उधर खबर मिलते ही घूरेलाल यादव के परिजन मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आक्रोशित ग्रामीणों को शांत कराने के बाद, परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई की। प्रभारी निरीक्षक बहरिया बच्चे लाल ने बताया कि करंट लगने से संविदा कर्मचारी की मौत हुई है। परिजनों के आरोप पर मुकदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

युवक ने फंसी लगाकर की आत्महत्या

लालापुर। क्षेत्र के अमिलिया गांव में युवक ने फांसी पर झूल आत्म हत्या कर ली । सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। लालापुर थाना क्षेत्र के अमिलिया गांव निवासी करण बधिक (22) पुत्र राजा राम अपने चार भाइयों में तीसरे नम्बर का था । राजाराम अपने बेटों के साथ मिलकर बर्तन का ब्यापार करके परिवार का भरण पोषण किया करता था । शनिवार के दिन किसी बात को लेकर करण ने कमरे में जाकर रस्सी के फंदे से झूल गया । तीन दिन पहले करण घर से अपने रिश्तेदार के यहां। बैराहना प्रयागराज घूमने के लिए घर वालों को बता कर गया था। वहां किस बात को लेकर आत्महत्या कर ली। वहां जब रिस्तेदारो ने कमरे में देखा तो करण फांसी लगाकर झूल गया था ।नजारा देख कोहराम मच गया । सूचना पुलिस को हुई तो मौके पर पहुंच शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना के बाद परिजनों का रो रोकर बुरा हाल हैं।

डीआईओएस ने शिक्षकों को किया सम्मानित

प्रयागराज। जिला विद्यालय निरीक्षक आर.एन विश्वकर्मा ने स्वयंप्रभा एवं दूरदर्शन पर बच्चों के अध्ययन हेतु प्रसारित होने वाले वीडियोज को बनाने वाले कुल 13 शिक्षक-शिक्षिकाओं को शिक्षक दिवस पर सम्मानित किया।

इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक ने सभी शिक्षकों के योगदान को रेखांकित करते हुए इसे एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि जनपद प्रयागराज के कई शिक्षकों के वीडियोज स्वयंप्रभा एवं दूरदर्शन, उ.प्र पर प्रसारित हो चुके हैं। उन्होंने शिक्षकों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आपका यह कार्य छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञान किरण के रूप में उनके पठन-पाठन में सहायक सिद्ध होगा। कार्यक्रम में जयदीप गांगुली, राजू यादव, अनुपम परिहार, जोगेन्द्र यादव, डॉ. हिमांशु सिंह, डॉ. पारूल यादव, डॉ. प्रीति मिश्रा, डॉ. मधु यादव, डॉ. प्रभाकर त्रिपाठी, कैप्टन राजेश तिवारी, दिनेश कुमार, एकता शुक्ला, डॉ.लालजी यादव, डॉ. बृजेश कुमार यादव को अपर मुख्य सचिव शिक्षा एवं शिक्षा निदेशक माध्यमिक द्वारा हस्ताक्षरित प्रशस्ति पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.प्रभाकर त्रिपाठी ने किया। इस दौरान सह जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. बी.एस यादव, सह जिला विद्यालय निरीक्षक के.के त्रिपाठी, अनुज कुमार त्रिपाठी, जय प्रकाश सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

शिक्षक दिवस पर सम्मानित शिक्षकगण

शिक्षक समारोह में शिक्षकों को किया गया सम्मानित

प्रयागराज। शिक्षक समाज की नींव है.वह न केवल बच्चों को शिक्षित करता है बल्कि उसमें संस्कार का बीज भी रोपित करता है.शिक्षक की समाज निर्माण में अहम भूमिका है। समाज में उसके योगदान की तुलना हो ही नहीं सकती.यह बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो.हरिशंकर उपाध्याय ने भारद्वाज गुरूकुलम रूदापुर देवनहरी में शिक्षकों के सम्मान समारोह में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कही.. प्रो.डी.पी.दूबे ने कहा बदलते समाज में निःसंदेह शिक्षकों की भूमिका भी बदलती रहती है.शिक्षक हर समय काल में अपनी जिम्मेदारियों का अच्छे से निर्वहन करता आ रहा है.डा.शैलेष कुमार पांडेय ने कहा महान शिक्षा विद् राधाकृष्णन का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है.यह समस्त शिक्षक समुदाय के लिए गर्व का विषय है.उन्होंने ने कहा चाहे जो जहाँ जिस पद पर हो उसमें सबसे अहम योगदान शिक्षक का ही होता है.डा.रामशिरोमणि मिश्र ने कहा गुरूकुल के समय से ही शिक्षक हमेशा पूजनीय रहा है.आज भी वह अपने समस्त उत्तरदायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहा है.विद्यालय के संरक्षक डी डी भगनानी ने कहा निःसंदेह समय के साथ तमाम विसंगतियां भी जुड़ जाती है परन्तु शिक्षक आज भी समाज का दर्पण बना हुआ है. सेवी आफाक अहमद ने कहा यह हम सबके लिए बहुत गर्व का विषय है कि आज इस विद्यालय प्रांगण में बेसिक से लेकर विश्वविद्यालय तक शिक्षकों का समागम हुआ है। हम सब इन्हें सम्मानित कर गर्व का अनुभव कर रहें है.डा.वंदना सिंह ने उपस्थित महिला शिक्षिकाओं क्रमशः रचना पांडेय, मीना यादव, सुनीता सिंह, स्वाती मौर्या, शालिनी सिंह को अंगवस्त्रम व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। देवराज उपाध्याय आफाक अहमद व शैलेष पांडेय ने डा.मिथिलेश उपाध्याय, लक्ष्मी कांत मिश्र,मुक्ति नारायण दूबे,उमापति पांडेय, अनुराग पांडेय, नीरज सिंह विवेकानंद आदि को सम्मानित किया। संस्थाध्यक्ष देवराज उपाध्याय ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया .विद्यालय के प्रबंधक विनय उपाध्याय ने धन्यवाद ज्ञापित किया.कार्यक्रम का सफल संचालन भारतेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

अंगवस्त्रम भेंट कर शिक्षिकाओं को सम्मानित करते हुए

मलिन बस्ती में बच्चों को शिक्षण सामग्री वितरित करतीं डॉ कीर्तिका अग्रवाल

डॉ कीर्तिका अग्रवाल ने बच्चों को बांटी शिक्षण सामग्री

प्रयागराज। शिक्षक दिवस के अवसर पर कीडगंज, कृष्णानगर मलिन बस्ती में डॉ0 कीर्तिका अग्रवाल (प्रदेशमंत्री महिला मोर्चा, भाजपा एवं निदेशक वात्सल्य हॉस्पिटल, प्रयागराज) द्वारा निःशुल्क शिक्षण सामग्री (पुस्तक, पेन इत्यादि) का वितरण किया और शिक्षक एवं शिक्षा के महत्व को बताया। उन्होनें स्थानीय बच्चों को संबोधित करते हुए उनसे कहा कि शिक्षा ही श्रेष्ठता की कुंजी है। उन्होंने बच्चों को बताया कि प्रख्यात शिक्षाविद् व भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। साथ ही साथ कोरोना से बचाव हेतु प्रेरित करने के लिए मास्क आदि का वितरण किया गया। डॉ0 कीर्तिका अग्रवाल ने बताया कि सोशल डिस्टेंसिग के माध्यम से भी स्वयं एवं आस-पास के लोगों को भी कोरोना जैसी महामारी से बचाया जा सकता है।

'फिट इंडिया फ्रीडम रन' में उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ की सहभागिता

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे सक्रिय रूप से युवा मामलों और खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू की गई 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' पहल को आगे बढ़ाने में सक्रीय योगदान कर रहा है। यह पहल 15 अगस्त, 2020 को 74 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है और यह 2 अक्टूबर, 2020 को महात्मा गांधी की 151 वीं जयंती तक चलेगी। आज, दिनांक 5 सितंबर 2020 को, सूबेदारगंज स्थित रेलगांव स्टेडियम, में उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ द्वारा एक 'रन एंड वॉक' का आयोजन किया गया। उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ के अध्यक्ष, एवं प्रमुख मुख्य इंजीनियर शरद मेहता ने इस अवसर पर संबोधित किया और प्रतिभागियों के बीच इस कार्यक्रम के विषय में जानकारी दी। उन्होंने सामाजिक दूरी के मानदंडों का पालन करते हुए फिटनेस बनाने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न खेलों - जिमनास्टिक्स, हॉकी, क्रिकेट, बैडमिंटन, गोल्फ, फुटबॉल के खिलाड़ियों सहित उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ के अधिकारियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर एक वीडियो क्लिप भी तैयार की गई है और इसे पहल के प्रचार के लिए प्रयोग किया जाएगा। ज्ञात हो कि, फिट इंडिया फ्रीडम रन का आयोजन बेहतर स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने और मोटापे, आलस, तनाव, चिंता, बीमारियों आदि से मुक्ति पाने के लिए किया जा रहा है। फिट इंडिया फ्रीडम रन अभियान की अभिप्राय यह है कि 'इसे कहीं भी, कभी भी किया जा सकता है!' इस अभियान के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद और सुविधा और शारीरिक क्षमता, स्वास्थ इत्यादि के अनुरूप रास्ते एवं समय का चयन कर सकता है। अपनी दौड़ को बीच में रोक सकता है, अपनी दौड़ को अपनी गति से दौड़ सकता है तथा अपनी प्रगति को मैन्युअल रूप से या किसी भी ट्रैकिंग ऐप या जीपीएस युक्त घड़ी के माध्यम से ट्रैक कर सकता है। फिट इंडिया अभियान के अंतर्गत आयोजकों और व्यक्तिगत रूप से शामिल व्यक्तियों को सोशल डिस्टैंसिंग के नियमों का पालन करते हुये अपने कार्यक्रमों को आयोजित करने तथा 'वर्चुअल रन' जिसका विश्व भर में धावकों / वॉकरों द्वारा प्रयोग किया जा रहा है।

'फिट इंडिया फ्रीडम रन' में भाग लेते अधिकारी व कर्मचारी

महिला की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने से हड़कंप, दहशत का माहौल

प्रयागराज। लालापुर गांव में एक महिला की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने से हड़कंप मच गया।जानकारी के अनुसार रेखा तिवारी पुत्री कमलेश शुक्ला कुछ दिन पूर्व अपने मायके लालापुर आई थी जिसकी जांच बुधवार दिनांक 02/09/2020 को हुई थी। और शुक्रवार दिनांक 04/09/2020को रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने से लालापुर गांव में हड़कंप मच गया।जिसे शंकरगढ़ से डॉ० अनूप कुमार व अन्य डॉक्टरों की टीम लालापुर पी एच सी के वार्ड बॉय सांवरे लाल शुक्ला वासा पति राकेश कुमार त्रिपाठी ने उनके घर पर जाकर होम कोरन्टीन कर दिया। सीएचसी अधीक्षक शंकरगढ़ डॉक्टर शैलेंद्र सिंह के निदेर्शानुसार डॉ अनूप कुमार सिंह ने कहा कि आप लोग प्रयागराज स्वरूपरानी मेडिकल हॉस्पिटल में जाकर कोरोनटाइम हो जाइए तो लड़की के पिता ने कहा कि हमारे घर में सारी व्यवस्था है हम यही कोरोन टाइम हो जाएंगे और प्रयागराज जाने से इनकार किया जबकि घर पर कोई व्यवस्था नहीं है न तो लैट्रिन है न पीने के लिए पानी है। कमलेश कुमार शुक्ला और उनके घर के अन्य सदस्य गांव के बाहर और गांव में घूम रहे हैं जिससे किसी को छू सकते हैं और यह करोना जैसी महामारी बीमारी किसी को भी हो सकती है । इसकी सुरक्षा व्यवस्था करवाना शासन की जिम्मेदारी है या यह जिम्मेदारी डॉक्टर द्वारा खुद निभाया जाए अगर ऐसी रोकथाम नहीं की जाती है तो लोगों में दहशत का माहौल भरा पड़ा हुआ है।

शिक्षक दिवस पर याद किए गये राधाकृष्णनन

करछना। शनिवार को क्षेत्र के इदिरा गाधी विद्यालय मे सर्वपल्ली राधाकृष्णनन के जन्म दिवस पर प्रबधक दिनेश सोनी ने उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए याद किया।उन्होने कहा कि प्रख्यात के शिक्षाविद् और भारत के दितीय राष्ट्रपति के जयंती के अवसर पर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वह एक महान शिक्षाविद् के साथ.साथ एक नई पीढ़ी को मार्ग दर्शन करने वाले शिक्षक भी थे जिनके आदर्शो को आज भी कुछ सीखने की जरूरत है। इस मौके पर अरूण कुमार मिश्र, राममणि द्विवेदी, शम्भूनाथ विवेक मिश्र, शिवानी पटेल रगीता पटेल आदि मौजूद रहे। इसी प्रकार क्षेत्र के कई स्कूलो मे राधाकृष्णनन का जन्म दिवस मनाया गया।

संदिग्ध अवस्था मे पेड़ से लटकती मिली युवक की लाश, हत्या की आशंका

करछना। थाना क्षेत्र निवैया मझियारी गाव मे शनिवार दोपहर घर से खेत की तरफ गये एक युवक का सदिग्ध अवस्था मे शव पेड से लटकता मिला गाव निवासी शिवशंकर यादव पुत्र मनिराम रोज निबैया मझियारी गांव के बाहर खेत में पेड के सहारे जमीन पर लटकता हुआ पाया गया युवक का पिता राम मनी यादव ने बताया की बेटा शिवशंकर सुबह लगभग दस बजे खेत में घर से गया है और लगभग 1 बजे के आस पास किसी ने बताया की खेत में लास है जानकारी के बाद गांव में हड़कंप मच गया जानकारी पर पहुंचे चौकी इंचार्ज भुंडा ने जानकारी सीओ करछना नृपेन्द्र कुमार वर्मा व थाना प्रभारी सुरेन्द्र कुमार वर्मा को दीएमौके पर पहुंचे और परिजनों को? समझा बुझाकर सांत कराते हूए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा सीओ करछना नृपेन्द्र कुमार वर्मा ने कहा की पोस्टमार्टम रिपोर्ट और परिजनो की तहरीर के आधार पर घटना की जांच कर जो भी तथ्य सामने आएंगे उस आधार की कार्रवाई की जाएगी।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

परीक्षार्थियों के लिए चलेगी दो जोड़ी विशेष गाड़ी

प्रयागराज। रेल प्रशासन द्वारा परीक्षार्थियों की सुविधा हेतु विशेष गाड़ियों के परिचालन के अंतर्गत प्रयागराज-रीवा तथा मथुरा-निजामुद्दीन गाड़ी चलाने का निर्णय लिया गया है।मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अजीत कुमार सिंह ने बताया है कि गाड़ी 01721- 07122 रीवा-प्रयागराज विशेष गाड़ी 01721 रीवा से 05 सितम्बर को तथा गाड़ी 07122 प्रयागराज से 06 सितम्बर को चलेगी। गाड़ी की संरचना में सामान्य श्रेणी 4, वातानुकूलित प्रथम श्रेणी सह वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी एक, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी एक, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी तीन, स्लीपर श्रेणी नौ, एसएलआर के दो डिब्बे होंगे। इसी प्रकार गाड़ी सं 04013-04014 मथुरा-निजामुद्दीन विशेष गाड़ी सं 04013 मथुरा से 06 सितम्बर को तथा गाड़ी सं 04014 निजामुद्दीन से 06 सितम्बर को चलेगी। गाड़ी की संरचना में सामान्य श्रेणी 5, चेयरकार 14, जनरेटर यान के दो डिब्बे होंगे।

अतीक के करीबी रिश्तेदार के अवैध निर्माण को प्रशासन ने किया जमींदोज

प्रयागराज। सिविल लाइंस में स्थित बहुबली पूर्व सांसद अतीक अहमद के अवैध निर्माण को बुल्डोर लगाकर गिरा दिया। धस्तीकरण कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल के साथ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे। सिविल लाइंस पानी टंकी के समीप स्थित पूर्व सांसद अतीक अहमद के करीबी रिश्तेदार इमरान की एक विल्डिंग थी। जिसे प्रशासन ने बताया कि यह पूरी तरह से अवैध था। जिसे कब्जा करके बनाया गया था। गुजारात जेल में बन्द अतीक के करीबियों के खिलाफ जिला प्रशासन एवं पुलिस कड़ी कार्रवाई करने में जुटा हुआ है। भूमाफिया अभियान के तहत प्रयागराज विकास प्राधिकारण के अधिकारी एवं अतिक्रमण प्रभारी जेसी मशीन के साथ सिविल लाइंस पानी टंकी के समीप स्थित विल्डिंग

अवैध निर्माण का ध्वस्तीकरण करता जेसीबी

के पास पहुंचे और अवैध कब्जा करके बनाई गई उक्त विल्डिंग को जेसीवी मशीन लगाकर गिरा दिया गया। क्षेत्राधिकारी सिविल लाइंस ने बताया कि प्रयागराज विकास प्राधिकरण के अतिक्रमण प्रभारी जिलाधिकारी के निर्देश पर अतीक के अवैध निर्माण को गिराया गया है।

पूर्व ग्राम प्रधान को गोली मारी, गंभीर

पंचायत चुनाव की रंजिश में हुई वारदात

प्रयागराज। जिले में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। वारदात को अंजाम देकर वह फरार हो जाते हैं। अब सोरांव के प्रधान को बदमाशों ने शुक्रवार की रात में गोली मार दी। बाइक सवार बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया। गंभीर हालत में प्रधान को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। तीन के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। पुलिस आरोपितों की तलाश में छापेमारी कर रही है। फिलहाल वह पकड़ से दूर ही हैं।

सतीश यादव सोरांव विकास खंड के अब्दालपुर खास गांव के पूर्व प्रधान हैं। वह किसी कार्य के चलते शुक्रवार की रात किसी काम से गए थे। करीब नौ बजे वह घर लौट रहे थे। रास्ते में लाल की पल्सर मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक पीछे से आए और उन्होंने पूर्व प्रधान को रोका। जब तक सतीश कुछ समझ पाते, बदमाशों ने तमंचे से उन्हें गोली मार दी। गोली के छर्रे पीठ पर लगने से वह लहूलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े.। उधर फायर की आवाज सुनकर ग्रामीण उस ओर दौड़े। जब तक लोग वहां पहुंते, घटनास्थल से बाइक से बदमाश फरार हो चुके थे। इस बीच वहां पुलिस और पूर्व प्रधान के घरवाले भी पहुंच गए। घायलावस्था में पूर्व प्रधान सतीश को अस्पताल में भर्ती कराया गया। पूर्व प्रधान सतीके की ओर से दी गई तहरीर के आधार पर पुलिस ने तीन नामजद के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया।

शिक्षा व दावा अधिकरणों के विरोध में हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों की सोमवार को बैठक

प्रयागराज। अभी तक दावा अधिकरण की पीठ लखनऊ में बनाने का विरोध कर रहे हाईकोर्ट के वकीलों के सामने शिक्षा अधिकरण का मुद्दा एक बार फिर आ गया है। शिक्षा अधिकरण का मुख्यालय लखनऊ में ही बनाने की जानकारी मिलने के बाद हाईकोर्ट बार ने इस मुद्दे पर फिर से सरकार से दो-दो हाथ करने की ठान ली है। मौजूदा स्थिति पर विचार करने के लिए सोमवार को पदाधिकारियों की बैठक बुलाई गई है।

हाईकोर्ट बार के महासचिव प्रभाशंकर मिश्र ने बताया कि भाजपा सरकार के कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह से हाईकोर्ट के वकीलों को आश्वासन मिला था कि शिक्षा अधिकरण की प्रधानपीठ प्रयागराज में बनेगी। उन्होंने इसके लिए काफी प्रयास भी किया था। इसका अर्थ है कि मुख्यमंत्री ने अपने ही मंत्री की बात नहीं मानी। प्रभाशंकर का कहना है कि इस मामले में मैने जनहित याचिका दाखिल कर रखी है जो अभी लंबित है। पूर्व अध्यक्ष राकेश पांडेय के नेतृत्व में वकीलों ने लंबी लड़ाई लड़ी थी। उनको भी साथ लिया जाएगा। लंबित जनहित याचिका में जल्दी सुनवाई का प्रार्थनापत्र देकर सुनवाई की मांग की जाएगी। शिक्षा अधिकरण को लेकर महीनों लड़ाई लड़ने के बाद वकीलों को सरकार की ओर से आश्वासन मिला था कि इसकी प्रधानपीठ की स्थापना प्रयागराज में ही होगी। मगर अचानक कैबिनेट में पास प्रस्ताव से पता चला कि सरकार अधिकरण की मुख्यपीठ लखनऊ में और प्रयागराज में सिर्फ बेंच बनाने जा रही है जो सिर्फ सप्ताह में दो दिन काम करेगी। इससे हाईकोर्ट के वकीलों को गहरा झटका लगा है। सोशल मीडिया पर भी इसे लेकर वकीलों की ओर जमकर पोस्ट किए जा रहे हैं। वहीं उ प्र जूनियर लायर्स एसोसिएशन ने राज्य सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के निर्णय एवं कानून के खिलाफ जाकर शिक्षा सेवा अधिकरण का मुख्यालय लखनऊ में बनाने की कड़ी निंदा की है। एसोसिएशन की बैठक की अध्यक्षता मिथिलेश कुमार तिवारी ने की। संचालन सचिव जी.पी. सिंह ने किया।एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ से नौकरशाही के दबाव में आकर कानून व सुप्रीम कोर्ट की विधि व्यवस्थाओं के विपरीत, शिक्षा सेवा अधिकरण का मुख्यालय लखनऊ में बनाने के फैसले को वापस लेने की मांग की है।

शिक्षा प्रधिकरण प्रयागराज से लखनऊ ले जाने पर प्रदर्शन

प्रयागराज। प्रयागराज की गरिमा एवं पहचान से खिलवाड़ के विरोध में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सुभाष चौराहे पर किया प्रदर्शन इलाहाबाद जो अब प्रयागराज हो गया है इसके नाम के बदलने के साथ-साथ सरकार इसकी सूरत बदलने की साजिश कर रही है। यहां से सभी मुख्यालय हटाए जा रहे हैं। शिक्षा मुख्यालय, प्राधिकरण चाहे वह पुलिस मुख्यालय हो चाहे तो कभी मान्नीय उच्च न्यायालय की अन्य बेंच स्थापित करने की बात की जाती है। सरकार यह भूलती जाती है कि इन्ही संस्थानों से यहां के होटल व्यवसाय, छोटे व्यापारी, सड़क पर ठेला लगाने वाले और शहर की तीन चौथाई

सुभाष चौराहे पर प्रदर्शन करते सपा कार्यकर्ता

आबादी का पालन पोषण इन संस्थानों से होता है। ये प्रयागराज वालों के साथ धोखा है। छात्रों के साथ धोखा है। इलाहाबाद की अपेक्षा मंत्रियों को भारी पड़ेगी। कोरोना के समय इलाहाबाद में रोजगार बढ़े इसपे ध्यान हो चाहिए न कि इलाहाबाद से रोजगार छीनने का। शिफ्टिंग में बहुत पैसा खर्च होगा। आज जब आर्थिक मंदी है, तब ऐसा कदम क्यों।

इतिहास और वर्तमान से खेलने वोलों को प्रयागराज सबक सिखाएगा। योगी जी को इलाहाबाद/प्रयागराज से इतनी नफरत क्यों एक-एक करके सारे अधिकरणों को प्रयागराज से हटाकर लखनऊ में शिफ्ट कर इलाहाबाद के महत्व को खत्म करना चाहती है सरकार। कबीना मंत्री जी की चुप्पी प्रयागराज वालों के वोटों से खिलवाड़ है। सरकार भूल गयी है कि परिवर्तन का बिगुल हमेशा प्रयागराज ने फूंका है चाहे वो आजादी का आंदोलन हो या जनतंत्र को नया जीवन देने के लिए आपातकाल का विरोध सरकार अपनी उल्टी गिनती शुरू कर दे। प्रयागराज के अस्मिता, गौरव से खिलवाड़ सरकार के गुरूर और घमंड को गर्त में मिलाकर ही छोड़ेगा। प्रदर्शन में मंजू पाठक, गुड्डी यादव, निर्मला यादव, मुशीर अहमद, सै०मो० अस्करी, प्रमोद बच्चा, मो०इमरान, पिन्टू यादव, मो०उमैस, नौशाद सिद्दीकी, आशीष पाल, अजीत यादव, आजाद, सुनील कुमार पाल, शिवम, नवनीत यादव, अभिषेक प्रधान, मुबशिर हारुन, श्रृषी यादव, मो० सलमान, अजय सम्राट, जाहिद, मो० अशरफ, सचिन दास, शीराज, बच्चा पासी, मोनिस आदि रहे।

नैनी जेल का संक्रमित एक बंदी एसआरएन अस्पताल से खिड़की तोड़कर फरार

प्रयागराज। स्वरूपरानी नेहरू (एसआरएन) अस्पताल में भर्ती कोरोना पॉजिटिव नैनी जेल का एक बंदी सुशील भारतीया उर्फ बंटी शनिवार शाम बाथरूम की खिड़की तोड़कर भाग निकला। इसकी जानकारी होते ही सुरक्षा में तैनात बंदीरक्षक और पुलिस कर्मियों के हाथ-पांव फूल गए। बंदी की तलाश में क्राइम ब्रांच समेत पुलिस की कई टीम लगाई गई है, लेकिन पता नहीं चल सका। उसने शुक्रवार रात भी नैनी जेल से भागने की कोशिश की थी और फूलपुर थाने से भी भाग चुका था।

सरायममरेज थाना क्षेत्र के अजूबा गांव निवासी कल्लू भारतीया के बेटे सुशील को फूलपुर पुलिस ने लूट व बाइक चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया था। नैनी जेल में पांच दिन पहले जांच में उसकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी, जिस पर उसे जेल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शनिवार सुबह सुशील की तबियत ज्यादा खराब हो गई। जांच के बाद डॉक्टरों ने उसे सुबह करीब 10 बजे स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल रेफर कर दिया।

यहां उसे कोरोना वार्ड में भर्ती कराया गया था, जहां से शाम को वह बाथरूम की खिड़की तोड़कर भाग निकला। इसकी जानकारी होने पर पुलिस अधिकारियों ने पूरे शहर में चेकिंग लगवा दी। बंदी के घर और संदिग्ध ठिकानों पर भी दबिश दी गई, लेकिन सुराग नहीं लग सका। सुशील के खिलाफ कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। ड्यूटी में लापरवाही बरतने वाले पुलिस वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की बात कही गई है। एसपी सिटी दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि अस्पताल के बाथरूम की खिड़की तोड़कर एक बंदी फरार हो गया है। उसके खिलाफ कोतवाली थाने में मुकदमा लिखा गया है। गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम लगाई गई है।

जिले में 356 नए संक्रमित मरीज मिले, तीन की मौत

प्रयागराज। कोरोना मरीजों की बढ़ रही संख्या का क्रम शनिवार को भी जारी रहा। कोरोना मरीजों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। शनिवार को जहां तीन कोरोना मरीजों की मौत हो गई वहीं 356 नए पॉजिटिव केस मिले हैं। विभाग व जिला प्रशासन के लाख कवायद के बाद भी कोरोना पर नियंत्रण हो पा रहा है। शहर से लेकर गांव तक मरीजों का इजाफा होता ही जा रहा है। कोरोना मरीजों की संख्या अब तक 11402 तक पहुंच चुकी है। 66 कोरोना मरीजों को अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया। अब तक 8387 कोरोना मरीज पूरी तरह से स्वस्थ हो चुके हैं और 2844 सक्रिय मरीज हैं जिसमें कुछ होम आइसोलेशन में हैं तो कुछ कोविड अस्पताल व कोविड केयर सेंटरों में भर्ती किए गए हैं।

प्रयागराज में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए अपर मुख्य सचिव डॉ. रजनीश दुबे रविवार को एसआरएन कोविड अस्पताल का निरीक्षण करने के लिए आ रहे हैं। वह सुबह 11 बजे कोविड अस्पताल व अस्पताल परिसर में स्थित नवनिर्मित सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का निरीक्षण करेंगे। अस्पताल में व्यवस्थाओं का जायजा लेंगे। सूत्रों के मुताबिक मुख्यमंत्री भी जल्द ही सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का शुभारंभ करने के लिए आ रहे हैं। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. जीएस वाजपेई ने बताया कि कोरोना मरीजों की जांच में तेजी लाई जा रही है ताकि कोरोना के प्रसार को कम किया जा सके। उन्होंने आमजन से अपील की है कि यदि कोरोना के लक्षण दिखें तो लापरवाही न करें और तत्काल जांच केंद्र पर जाकर अपनी जांच करा लें।

धार्मिक सौहार्द बिगाड़ने के मामले में कानपुर का सैफ अंसारी गिरफ्तार

प्रयागराज। सोशल मीडिया के माध्यम से धार्मिक सौहार्द विगाड़ने की नाम कोशिश करने के मामलें खुल्दाबाद पुलिस को एक बड़ी कामयाबी मिली। पुलिस ने कानपुर के सैफ अंसारी को गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायालय पेश किया जाएगा। गिरफ्तार आरोपित कानपुर के रेलबाजर कैन्ट थाना क्षेत्र के गोरा कब्रिस्तान निवासी सैफ अंसारी पुत्र हारून है। उसके खिलाफ कैन्ट एवं खुल्दाबाद थाने में सोशल मीडिया के माध्यम से युट्यूब चैनल बनाकर धार्मिक सौहार्द बिगाड़ने सम्बन्धी भड़काऊ भाषण देने एवं अपलोड करने वाली महिला सना उर्फ हीरखान का सहयोग करने का मुकदमा दर्ज किया गया है। गौरतलब है कि 25 अगस्त को खुल्दाबाद थाने की पुलिस ने हीर खान उर्फ सना को गिरफ्तार करके जेल भेजा था। हालांकि पुलिस वर्तमान में रिमाण्ड पर लेकर गहन सबूत एवं देश में धार्मिक उनमान एवं सौहार्द खराब करने वाले पूरे गिरोह की जांच करने के लिए एटीएस, एसटीएफ एवं अन्य खुपिया एजेंसिया लगी हुई है।वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित के निर्देश पर खुल्दाबाद प्रभारी निरीक्षक विनीत सिंह , क्राइम ब्रांच एवं साइवर क्राइम एवं अन्य टीमें लगी हुई है। प्रयागराज में धार्मिक उनमान समेत अन्य सरकार विरोधी गतिविधियों में शामिल सभी सदस्यों का सुराग लगने में जुटी हुई है। सूत्रों की माने तो हीरखान तो एक मुहरा है उसके पीछे काम करने वाले लोगों का जान यहां से लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए है। ऐसे लोगों को धन कहा से मुहैया हो रहा है ऐसे कई प्रकार के सवालों का जबाब तलाशने में एन्टेन्लीजेंस के अधिकारी लगातार खोजबीन कर रहें है।

महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस प्रांगण में समारोह आयोजित

प्रयागराज। सराय इनायत के हबूसा मोड़ पर स्थित महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के प्रांगण शिक्षक दिवस के अवसर पर शनिवार को भव्य समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रही। कार्यक्रम की शुरूआत महावीर ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के अध्यक्ष सुधांशु धर त्रिपाठी, एवं सचिव डॉ पंकज त्रिपाठी ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन, स्वर्गीय महावीर प्रसाद त्रिपाठी एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की। इसके पश्चात संस्थान के सचिव डॉ पंकज त्रिपाठी ने समारोह में उपस्थित सभी संकाय के शिक्षकों शिक्षिकाओं प्रधानाचार्य को उनके कर्तव्य बोध का परिचय कराते हुए सर्वपल्ली राधाकृष्णन के पद चिन्हों पर चलने का सुझाव

शिक्षक दिवस पर डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए

दिया। उन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हम भारतवासी कितने सौभाग्यशाली हैं आज भी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सम्मान में शिक्षक दिवस मना रहे हैं। हम सभी अध्यापक अध्यापिका ओं को इन महापुरुष के पद चिन्हों पर चलकर समाज मैं देश में बल्कि विश्व में एक नया कीर्तिमान स्थापित करते हैं। उन्होंने सर्वपल्ली राधाकृष्णन के बारे में बताते हुए कहा कि भारत के इतिहास में पांच सितंबर की तारीख का एक खास महत्व है। दरअसल यह देश के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है' और उन्हीं के सम्मान में इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है' 5 सितम्बर 1888 को तमिलनाडु में जन्मे डॉ. राधाकृष्णन को भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक के तौर पर जाना जाता है' पूरे देश को अपनी विद्वता से अभिभूत करने वाले डॉ. राधाकृष्णन को भारत सरकार ने सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था' आज हम सभी यहां उपस्थित अध्यापक अध्यापिकाओं प्रधानाचार्य से अपील करता हूं कि आप सभी लोग स्वर्ग सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के पद चिन्हों पर चलें उनके विचारों को आत्मसात करें। इस दिव्य और भव्य समारोह के व्यवस्थापक व संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी अजय सिंह के घोषणा के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

आमद न करने वाले पांच पुलिसकर्मी सस्पेंड

प्रयागराज। एसएसपी अभिषेक दीक्षित ने विभिन्न थानों से लाइन हाजिर किए गए पुलिसकर्मियों के पुलिस लाइन में आमद न करने पर पांच पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया। इनमें सिपाही अजय यादव, चालक संजय तिवारी, चालक रमेशचन्द्र पाण्डेय, चालक सन्तोष यादव और चालक बलवन्त सिंह हैं। गौरतलब है कि 26 अगस्त को एसएसपी ने विभिन्न थाना क्षेत्रों में तैनात सिपाही हेड कांस्टेबल और थानेदारों के चालकों को कारखासी और अवैध वसूली के आरोप में लाइन हाजिर किया था। एसएसपी के आदेश के बाद भी कुछ पुलिसकर्मियों ने आदेश का अवहेलना करते हुए पुलिस लाइन में आमद नहीं किया था, जिसकी शिकायत मिलने पर शुक्रवार को एसएसपी ने यह कार्रवाई की।

प्रयागवाल सभा ने आगामी माघ मेले को लेकर की बैठक

प्रयागराज। प्रयागवाल सभा प्रयागराज के पदाधिकारियों एवं सदस्यो की एक बैठक यमुना बैंक रोड स्थित शिवाला घाट पर हुई। जिसमें आगामी वर्ष 2021 में लगने वाले सनातन माघ मेला और कोरोना महामारी की आज की स्थिति पर चर्चा हुई। महामंत्री राजेन्द्र पालीवाल ने कहा कि महामारी की भीषण स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए तथा भविष्य मे माह अक्टूबर या नवम्बर तक कोरोना वायरस से बचाव हेतु जो वैक्सीन आने वाली है तथा प्रधानमंत्री के अथक प्रयास से यह वैक्सीन यदि नवम्बर तक उपलब्ध हो जाती है तो आगामी माघ मेला लगाया जा सकता है। बैठक में यह भी निश्चित किया गया कि मुख्यमंत्री को इस संदर्भ में अवगत कराया जाये कि वैक्सीन समय से आ जाये तो उसे माघ मेले के प्रवेश द्वार पर स्वास्थ्य विभाग का कैम्प लगाकर प्रत्येक आगन्तुक तीर्थयात्रियों को वैक्सीन लगाकर मेले में प्रवेश देने से मेला भी सकुशल होगा और आम जनमानस को महामारी से बचाव की वैक्सीन भी लग जायेगी। बैठक में मुख्यमंत्री से सनातन परंपरा को बचाने का अनुरोध किया गया। इस दौरान सुभाष पांडेय अध्यक्ष, राजेंद्र पालीवाल महामंत्री, राम कृष्ण तिवारी, अजय पांडेय, त्रिवेणी प्रसाद मिश्र, उदय नारायण पांडेय, संतोष भारद्वाज, राजेश तिवारी आदि रहे।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक
स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

विद्या भारती से सम्बद्ध विद्यालयों में संस्कार पक्ष बहुत मजबूत : सांसद

प्रयागराज। आज के समय में विद्या भारती से संचालित जितने भी विद्यालय हैं उसमें संस्कार पक्ष बहुत मजबूत है। शिक्षक के लिए वह सभी छात्र-छात्राएं महत्वपूर्ण हैं जो पूरे मन से शिक्षा ग्रहण करते हैं। शिक्षक की नजर में सभी छात्र एक समान हैं, चाहे वह गरीब हो या अमीर हो।

उक्त बातें मुख्य अतिथि सांसद केसरी देवी पटेल ने शनिवार को रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज, राजापुर, प्रयागराज में शिक्षक दिवस समारोह के दौरान संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि विद्यालय ने जो घर पर माता-पिता पूजन का जो कार्यक्रम रखा है वह बहुत ही सराहनीय

शिक्षक दिवस पर संबोधित करती सांसद केसरी देवी पटेल

है। सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए गूगल मीट, फेसबुक लाइव एवं यूट्यूब लाइव प्रसारण के माध्यम से शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन धूमधाम से मनाया गया।

संगीताचार्य मनोज गुप्ता ने ह्रसागर से भी गहरा बंदे गुरुदेव का प्यार है, देख लगाकर गोता इसमें तेरा बेड़ा पार है॥ भजन से गुरु की महिमा का बखान कर एवं विद्यालय के पूर्व छात्र एवं वर्तमान में युवा कवि शिवम भगवती ने अपनी रचनाओं से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात पूर्व छात्र-छात्राओं ने समस्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को तिलक, माल्यार्पण एवं आरती उतारकर तथा उपहार प्रदान कर उनका आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम की एक खास विशेषता रही, जो छात्र छात्राएं विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सके, उन सभी ने अपने गुरुजनों के सुझाव से घर पर ही अपने माता-पिता का पूजन किया एवं लाइव कार्यक्रम का सजीव प्रसारण देखा। मनोज गुप्ता ने बताया कि आस्था समिति ने 54 शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं लायंस क्लब अशोक ने 12 शिक्षक शिक्षिकाओं को सम्मानित किया। तकनीकी टीम प्रमुख शिवजी राय सहित दीपक दयाल, प्रभात शर्मा, सुनील गुप्ता, ऋचा गोस्वामी, जितेंद्र तिवारी, विद्या सागर गुप्ता, दिनेश शुक्ला, विभु श्रीवास्तव एवं अनूप सिंह का विशेष योगदान रहा।

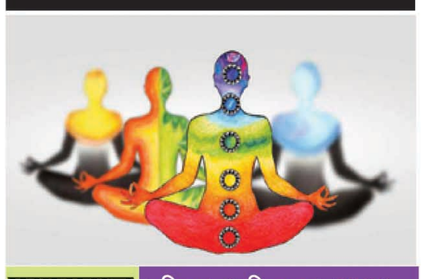

प्रयागराज रविवार, 6 सितम्बर, 2020

क्रियायोग सन्देश

क्रियायोग ध्यान से मानव अस्तित्व से पुरुषोत्तम की तरफ यात्रा

चिन्तन करें कि अगर हमें कहीं जाना हो, लेकिन जिस जगह जाना हो उसका ठीक से पता मालुम न हो, तो हमें पहुंचने में बहुत ही कठिनाई होगी। चाहे हम साइकिल से या मोटरसाइकिल से या कार या हवाई जहाज से जा रहे हो, हम पहुंच नहीं पाएंगे। लेकिन, अगर हमारे पास रास्ते का मैप हो, और हम मैप को याद करते रहें, प्रसन्नता व धैर्य से चलते रहें, तब बिना परेशानी के हम गंतव्य तक पहुंच जाएंगे। इसी तरह अगर हम क्रियायोग अभ्यास वर्षों से करते आ रहें हैं, लेकिन अभ्यास करने का लक्ष्य याद नहीं है, तब लक्ष्य पहुंचने में बहुत कठिनाई होगी और हम बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ पायेंगे।

हमारा लक्ष्य क्या है और इसको पहुंचने का मार्ग क्या है? हम सबके जीवन का लक्ष्य है कि हमारा अस्तित्व बना रहे और साथ ही साथ अस्तित्व परम ज्ञानमय और परम आनन्दमय युक्त रहे । वैज्ञानिको ने यह सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग अभ्यास से हम अपने लक्ष्य को शीघ्रता से प्राप्त कर सकते हैं। यह सब निरन्तर याद रहने पर ही हम क्रियायोग का सम्यक अभ्यास कर सकेंगे।

क्रियायोग के सम्यक् अभ्यास से हम बीमारियों, चिन्ताओं व सभी प्रकार की अज्ञानता से मुक्त हो जाते हैं ।

क्रियायोग अभ्यास से इस सत्य की अनुभूति होती है कि चित ही ज्ञान है, जिसको पाने से यह पता लगता है कि हम और ब्रह्माण्ड की सभी रचनायें अमर हैं । किसी भी रचना की मृत्यु नहीं होती है, उसका केवल

पुरूषोत्तम राम

रूप बदलता है। जब यह पता लगता है तभी हमें सच्चा आनंद आता है। आनंद की कमी सिर्फ भय से होती है।

यह लक्ष्य याद रखिए की मृत्यु होती नहीं है। केवल अमरता का ही अस्तित्व है। यह सिद्ध हो चुका है कि आकाश, वायु, अग्नि, जल, व पृथ्वी (अणु- परमाणु) ये पांचो तत्व मरते नहीं हैं। हमें जीवन में यह लक्ष्य बनाना चाहिए कि जब हम इस लोक से अदृश्य लोक में जाना चाहें तभी हम जायें । इस ज्ञान की प्राप्ति को प्रभु का दर्शन कहते हैं। इस प्रयास को प्रभु की भक्ति कहते हैं।

निराकार परब्रह्म से जब पूरा ब्रह्मांड प्रकट हुआ, तब

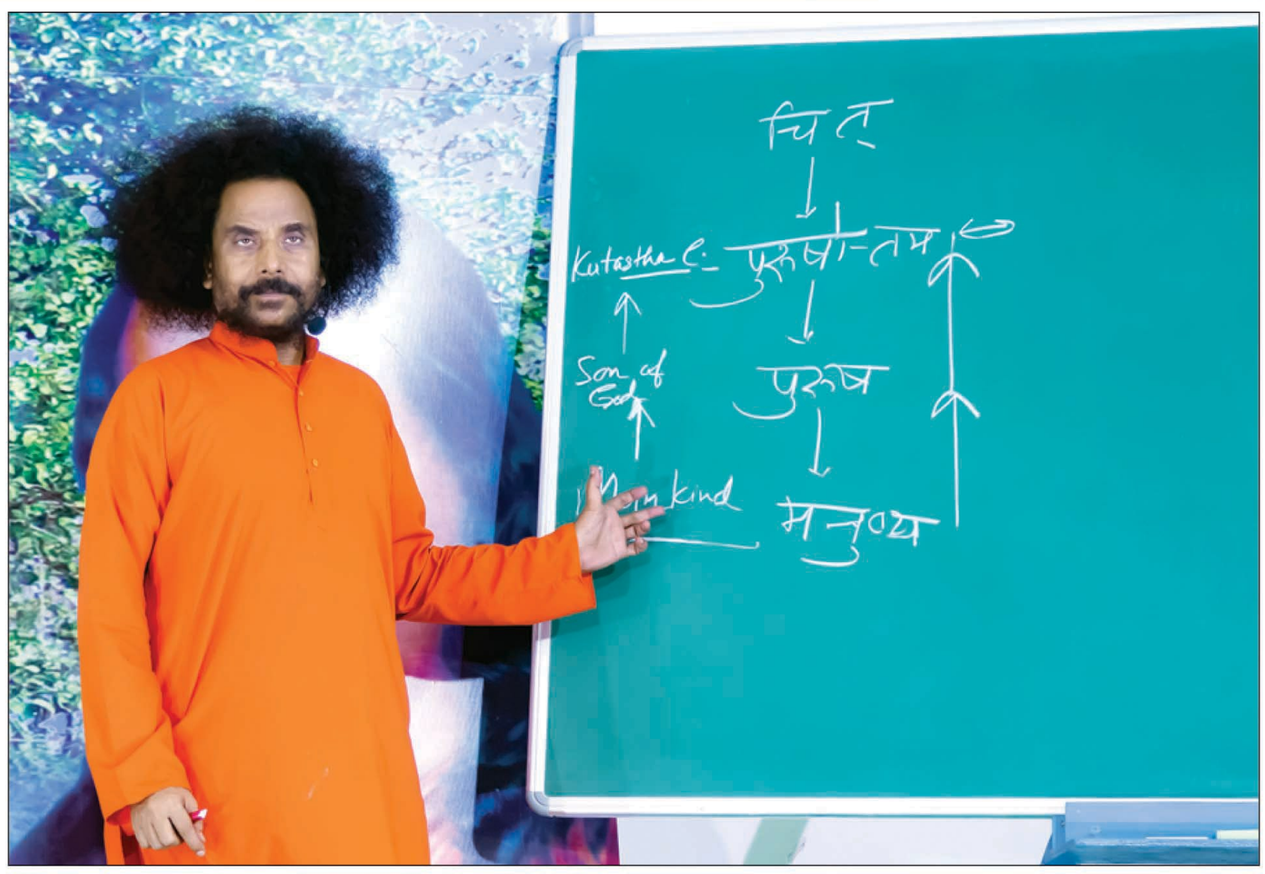

सबसे पहला अस्तित्व जो प्रकट हुआ वह पुरुषोत्तम हैं । पुरुषोत्तम को ही कुटसथ कहते हैं। कुटस्थ वह प्रेम है जिसमें सब समा जाते हैं । सभी को अनन्त प्रेम करने वाले अस्तित्व को ही कूटस्थ कहते हैं । कूटस्थ अस्तित्व में सभी के लिये अनन्त प्रेम है चाहे राक्षस हो या देवता। पुरुषोत्तम से ही अगला क्रिएशन प्रकट होता है । अगले क्रियेशन को पुरुष कहां गया है। जब हम पुरुष के रूप में होते हैं तो हम जानते हैं कि हम ईश्वर के संतान हैं। इस समय हमें अडिग कॉन्फिडेंस रहता है। इसके बाद हम मनुष्य के रूप में होते हैं, फिर हम राग - द्वेष, बीमारी, चिंता आदि से घिर जाते है। अगर हम मनुष्य के रूप में हैं,जहां हम चिंता बीमारी सब महसूस करते हैं, तब हमें मानव अस्तित्व से पुरुषोत्तम की तरफ की यात्रा करनी होती है। यही हमारी यात्रा है। अगर हम इसको भूल जाएंगे तो क्रियायोग छूट जाएगा। क्रियायोग वह विमान है जिस पर जब हम बैठेंगे, तब लक्ष्य तक अवश्य पहुंच जाएंगे । हमें मनुष्य से पुरुष बनना है और फिर पुरुषोत्तम। हर काम करते हुए इसको याद रखें तभी हम राष्ट्र की और सभी की सच्ची सेवा कर पाएंगे।

ALWAYS REMAIN CONNECTED WITH MAP OF SPIRITUAL JOURNEY SHOWING OUR ULTIMATE AIM.

If we plan to go home but we do not have an address of our destination, we will not be able to reach home. Likewise, if we are practising Kriyayoga without having the aim in our mind, we will not be inspired to practice deeply. Then, we will not experience much difference in our existence even after many years of practise. It is very important for us to have the map of our journey to make steadfast progress. Otherwise, we will have a tortuous path.

What is our aim and path of journey? Our ultimate aim is to realize our Immortal Nature, at which point, we would be in the state of Sat-Chit-Anand, where we are one with Truth, Universal Consciousness and Bliss. This stage is known as Purushottam where we are one with Kutastha Consciousness and feel love for all creation. Lord Ram is referred to as Purushottam Ram.

Our present stage is that of a Manushya (Human) where we experience many limited tendencies like anger, lust, attachment and aversion, delusion, pride, ignorance and habit.

From Manushya, we have to uplift to the stage of Purusha - one who experiences self as Child of God. A Child of God experiences its Immortal Nature, lives life based on the principle of Truth and Non-violence and hence is full of confidence, peace and Bliss.

In this way, we have to visualise the map of our spiritual journey from that of a Manushya to Purusha and onward to Purushottam.

For this journey, we can take the non-stop, secure and safest jet-plane of Kriyayoga. Then, we will have greatest love for all and will be able to serve all humanity in the best way possible.

File Photo